**बी.पी.एन.आई. और ए.एच.पी.आई. का संयुक्त मीडिया ब्योरा**

# प्रसूति अस्पताल "स्तनपान के अनुकूल" बनने के लिए क्यों चाहते है मान्यता

**जैसा कि स्वास्थ्य पेशेवर संगठन निजी अस्पतालों से स्तनपान के अनुकूल बनने का आग्रह करते हैं, चेन्नई स्थित ब्लूम हेल्थकेयर राष्ट्रीय प्रमाणित केंद्र से मान्यता प्राप्त करने वाला पहला अस्पताल बन गया है।**

**नई दिल्ली 17 दिसंबर 2021:**

क्या आप एक होने वाली मां के रूप में आश्वस्त हैं कि आपके द्वारा चुना गया अस्पताल यह सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक प्रयास करेगा कि आपके बच्चे को जन्म देने के एक घंटे के भीतर स्तनपान कराया जाएगा और प्रारंभ से ही स्तनपान शुरू कराने में आपकी सहायता की जाएगी? क्या अस्पताल जन्म के तुरंत बाद आपके बच्चे के साथ त्वचा से त्वचा का संपर्क सुनिश्चित करेगा? अधिकांश माताओं के पास ऐसा कोई आश्वासन नहीं है/था। अस्पतालों को "स्तनपान के अनुकूल" बनने के रूप में प्रमाणित करने की नई पहल से माताओं को एक अस्पताल चुनने में मदद मिलेगी, जो अपने बच्चे को स्तनपान कराने के लिए उनकी पसंद का समर्थन करने पर जोर देती हैं !

एक 30 वर्षीय संगठन- ब्रेस्टफीडिंग प्रमोशन नेटवर्क ऑफ इंडिया (बी.पी.एन.आई.) एवं एसोसिएशन ऑफ हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स ऑफ इंडिया (ए.एच.पी.आई.), जिसमें प्रसूति केंद्रों सहित 12,000 निजी अस्पताल शामिल हैं, ने एक रणनीतिक साझेदारी में प्रवेश किया है और सफलतापूर्वक स्तनपान कराने के बारे में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के दस चरणों के आधार पर प्रसूति सेवाएं प्रदान करने वाले निजी अस्पतालों के प्रत्यायन (मान्यता) के लिए 'स्तनपान के अनुकूल अस्पतालों' के लिए 'राष्ट्रीय प्रत्यायन केंद्र' एन.ए.सी (NAC) लॉन्च किया है। इसका उद्देश्य अस्पतालों को नीति, कार्यक्रमों और तौर तरीकों के आधार पर मूल्यांकन करना और उन्हें एक कुंजी के आधार पर ग्रेड देना है। इस सिलसिले में **अब तक 20 से अधिक अस्पतालों ने आवेदन किया है और उनमें से एक- ब्लूम हेल्थकेयर "स्तनपान के अनुकूल" के रूप में मान्यता-प्राप्त करने वाला पहला अस्पताल है।**

**ऐसी पहल क्यों?**

हाल ही में जारी एन.एफ.एच.एस.-5 (NFHS.5) से पता चलता है कि लगभग 90 प्रतिशत माताएं स्वास्थ्य सुविधा में प्रसव कराती हैं। इससे यह भी पता चला कि एन.एफ.एच.एस.-4 में सीज़ेरियन डिलीवरी की दर 17.5 प्रतिशत थी, जो बढ़ कर एन.एफ.एच.एस.-5 में 21.2 प्रतिशत हो गई, जिसमें से सरकारी अस्पताल की 14.3 प्रतिशत और निजी अस्पतालों की 47 प्रतिशत हिस्सेदारी है। इसका मतलब है कि हर दूसरी मां निजी अस्पतालों में सीज़ेरियन सेक्शन द्वारा प्रसव कराती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन सिजेरियन सेक्शन द्वारा 10 से 15 प्रतिशत प्रसव की सिफारिश करता है। वैज्ञानिक प्रमाण स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि सीज़ेरियन सेक्शन द्वारा प्रसव पर जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान की प्रारंभ से ही शुरुआत और माता एवं शिशु के बीच त्वचा-स्पर्श पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। एक "मेटा-विश्लेषण ने दर्शाया कि सीज़ेरियन सेक्शन प्रारंभ से ही स्तनपान की शुरुआत के 46 प्रतिशत कम प्रसार से जुड़ा था।"

भारत अस्पतालों में 88.6 प्रतिशत जन्म होने पर गर्व कर सकता है, हालांकि यह खबर इतनी अच्छी नहीं है क्योंकि केवल 41.8 प्रतिशत मां ही जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान कराने में सक्षम होती हैं और जन्म के तुरंत बाद अपने बच्चों को त्वचा से त्वचा का स्पर्श प्रदान करती हैं। इसका मतलब है कि 58 प्रतिशत माताएं सक्षम नहीं हैं, जो एक बड़ी संख्या है। यानी सालाना लगभग 2.45 करोड़ जन्म, जिसमें से 14 करोड़ जन्म के समय पर मां के दूध एवं इसके लाभों से वंचित हैं। यह मां और बच्चे दोनों के मानवाधिकारों का उल्लंघन है।

ए.एच.पी.आई. के महानिदेशक डॉक्टर गिरधर ज्ञानी के अनुसार, "यह एक अद्भुत पहल है और निश्चित रूप से कुछ वर्षों के भीतर अस्पतालों में तौर तरीकों को बदल देगी। जैसा कि साक्ष्य स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि अगर हम अस्पतालों में स्तनपान की दर में सुधार लाते हैं तो यह नवजात शिशु की मृत्यु दर को कम करेगा और हमारी शिशु मृत्यु दर (आई.एम.आर.) को प्रभावित करेगा। भारत में प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 35 शिशु मृत्यु दर दक्षिण एशियाई क्षेत्र में श्रीलंका में 07 और बांग्लादेश में 24 शिशु मृत्यु दर से पीछे है।"

प्रारंभ से ही स्तनपान दर 1992 में 9 प्रतिशत थी, जो लगातार बढ़ते हुए 2015 में 41 प्रतिशत हो गई है। लेकिन, इसमें पिछले पांच वर्षों में कोई वृद्धि नहीं हुई है। दिल्ली स्थित गुरु तेग बहादुर अस्पताल में प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग में प्रोफेसर और यूनिट हेड डॉक्टर किरण गुलेरिया और एन.ए.सी.(NAC) के विशेषज्ञ सलाहकार समूह के एक सदस्य ने कहा, "यह बहुत चिंता का विषय है।" उन्होंने आगे बताया- "सभी महाद्वीपों से इस बात के बहुत-सारे साक्ष्य हैं कि सीज़ेरियन सेक्शन से पहले घंटे में स्तनपान कराने के तौर तरीकों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए, हमें सीज़ेरियन सेक्शन के दौरान स्तनपान के परिणामों में सुधार के लिए नीति और तौर तरीकों में बदलाव की आवश्यकता है।"

**माताओं के अनुभव उन्हीं के शब्दों में**

मुंबई की जिन्सी वर्गीस ने बताया, "जब मैंने 2017 में अपने बच्चे को जन्म दिया, तो मैंने स्तनपान कराने के बारे में सहायता और मार्गदर्शन के लिए अस्पताल के कर्मचारियों की ओर देखा। मुझे कभी नहीं बताया गया कि स्तनपान कराने की अपनी चुनौतियां होती हैं। इससे मैं एक मां के रूप में तब नाकाम हो गई, जब मैं अपने सीज़ेरियन सेक्शन के बाद अपने बच्चे को स्तनपान नहीं करा सकी थीं। मैंने सारी आशाएं खो दीं और निराशा में

थी क्योंकि मैंने सोचा कि मैं अपने बच्चे को कभी भी स्तनपान नहीं करा पाऊंगी। अगर मेरे डॉक्टरों ने मुझे पहले से बताया और शिक्षित किया होता, तो मैं बेहतर तरीके से तैयार हो जाती और जानकारी रखती होती कि क्या करना है।"

चेन्नई की एक मां गौरीशंकरी ने कहा: "मैंने अपने बच्चे को सुनहरे समय(यानि जन्म के पहले एक घंटे ) में स्तनपान नहीं कराया और अस्पताल में किसी ने भी इसके बारे में नहीं बताया! कोई "ब्रेस्ट क्रॉल" नहीं, वास्तव में मुझे बच्चा भी नहीं दिखाया! हम दोनों अलग हो गए और मेरी सहमति के बिना बच्चे को दूसरे दूध का सेवन कराया गया, सिर्फ इसलिए कि मेरा सीज़ेरियन सेक्शन हुआ था।"

चेन्नई की एक अन्य मां वर्षा राव ने कहा, "मैंने अपने लड़के को 11.45 बजे सिजेरियन-सेक्शन द्वारा जन्म दिया। प्रसव के बाद या वार्ड में शिफ्ट होने के बाद भी उसे अपने पास नहीं रख सकी। प्रसव के तुरंत बाद उसे थामना और उसे स्तनपान कराने जैसी सभी चीजों का आनंद पाना चाहती थी, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा कुछ नहीं हुआ। मैं दूध स्रावित नहीं कर पा रही थी और उसे फार्मूला मिल्क यानि ऊपरी दूध का सेवन कराया गया। इससे मैं अब तक भी आहत हूं।"

एक अन्य मां, संगीता ने कहा, "मैं गर्भावस्था के दौरान और साथ ही प्रसव के बाद भी कठिन समय से गुज़री हूं। मैंने सीज़ेरियन सेक्शन (ब्रीच पोजीशन) की योजना बनाई थी, हालांकि मुझे उस जनरल एनीस्थीसिया के बारे में सूचित नहीं किया गया, जो मुझे दिया गया था। यहां तक कि मैं सर्जरी के बाद 4 घंटे तक अपने बच्चे को देखने के बारे में पूरी तरह से उनींदा अवस्था में थी, कोई सुनहरा समय नहीं मिला, मेरे और शिशु के बीच किसी भी प्रकार का त्वचा-स्पर्श भी नहीं हुआ। इससे मुझे स्तनपान कराने में बहुत सारी समस्याएं हुईं।"

गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को तैयारी कराने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और सीज़ेरियन सेक्शन द्वारा सर्जरी के बाद उनका शिशु के साथ त्वचा-स्पर्श और जल्दी स्तनपान सुनिश्चित करने की संभावना में सुधार होता है। नई लॉन्च की गई प्रत्यायन (मान्यता) की पहल महिला को जन्म के बाद स्तनपान कराने में सफल होने में मदद करने के लिए आवश्यक सभी नीति और कार्यक्रम संबंधी कदमों को संस्थागत बनाने में सहायक होती है, चाहे उसका सीज़ेरियन सेक्शन हो या योनि-मार्ग से प्रसव। मान्यता में गवर्नेंस (शासन) के संकेतक, नीतिगत कार्रवाइयां, डेटा प्रबंधन, साथ ही गर्भावस्था के दौरान मां को तैयार करने और जन्म के समय उसकी मदद करने के कदम शामिल हैं।

यूनिसेफ इंडिया के डिप्टी रिप्रेजेंटेटिव, प्रोग्राम्स, डॉ. अर्जन द वाग्ट के अनुसार, "नवजात शिशुओं को जीवन के पहले घंटे के भीतर स्तन से लगाना शिशुओं को उनके जीवन में सबसे कमजोर समय के दौरान बचाता है। स्तनपान के अनुकूल स्वास्थ्य सुविधाएं कुशल परामर्श सहायता प्रदान करती हैं एवं स्तनपान के विकल्पों के बारे में अंतर्राष्ट्रीय विपणन संहिता और इसके बाद के विश्व स्वास्थ्य सभा के संबंधित प्रस्तावों को प्रभावी ढंग से लागू करती हैं, जो कि शिशु दूध विकल्प दूध पिलाने की बोतलें, और शिशु खाद्य (उत्पादन, आपूर्ति और वितरण का विनियमन) अधिनियम है। इसकी भारत में माताओं को सफलतापूर्वक स्तनपान कराने में मदद में महत्वपूर्ण भूमिका है।"

भारत में स्तनपान में सुधार के लिए तीन दशकों से भी अधिक समय से काम कर रहे बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अरुण गुप्ता ने इस पहल को डिजाइन किया है। वह कहते हैं, "हम देश के सभी प्रसूति अस्पतालों को स्व-मूल्यांकन करके स्तनपान के अनुकूल होने की उनकी तत्परता की जांच करने के लिए आमंत्रित करना चाहते हैं। यह देखभाल के मानक में सुधार को गति प्रदान करेगा। एक स्वतंत्र बाहरी मूल्यांकन किया जाता है और यदि अस्पताल ग्रेड-1 प्राप्त करता है, तो उसे मान्यता मिल जाती है। यह उन्हें "स्तनपान के अनुकूल" के रूप में पेश करने में मददगार होगा क्योंकि अधिकाधिक माताएं इस तरह के प्रतिस्पर्धी माहौल में अपनी छवि में मूल्य-संवर्धन जोड़ने के लिए इस प्रमाणीकरण की तलाश करेंगी।

चेन्नई का ब्लूम हेल्थकेयर एन.ए.सी.(NAC) से मान्यता प्राप्त करने वाला पहला अस्पताल है, जो ग्रेड-1 पाने पर उत्साहित है। ब्लूम हेल्थकेयर की निदेशक डॉ. कविता गौतम ने कहा, "हम मातृत्व सेवा में अपने देखभाल के मानक में सुधार करना चाहते हैं और मान्यता की प्रक्रिया को बहुत पारदर्शी एवं उपयोगी पाया है। हम योनि-मार्ग से प्रसव और सीज़ेरियन-सेक्शन डिलीवरी दोनों स्थितियों में जन्म के एक घंटे में स्तनपान कराने में माताओं की मदद के लिए अपनी क्षमता और तैयारियों का निर्माण करना चाहते थे और हम सफलता पा रहे हैं।"

..... **समाप्त** .....

**अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें**:

डॉक्टर गिरधर ज्ञानी, डी.जी., ए.एच.पी.आई., मोबाइल: 98107 30040, ईमेल: gyani@ahpi.in

डॉक्टर अरुण गुप्ता, मोबाइल: 9899676306 ईमेल: arun.ibfan@gmail.com

**संपादक के लिए नोट्स**

यूनिसेफ के डेटा

https://www.unicef.org/india/key-data

**एक्सक्लुसिव रूप से स्तनपान को बढ़ावा देने के लिए प्रारंभ से ही स्तनपान की शुरूआत की जानी चाहिए - डब्ल्यू.एच.ओ.**

https://www.who.int/elena/titles/early_breastfeeding/en/#:~:text=WHO%20recommendations,the%20first%20hour%20after%20delivery.

**Breastfeeding Promotion Network of India https://www.bpni.org/**

**Association of Healthcare Providers of India https://www.ahpi.in/**

**'National Accreditation Centre (NAC) for Breastfeeding Friendly Hospitals' https://www.bfhi-india.in/home.php**

**The World Health Organization recommends 10 to 15% deliveries maybe conducted**
**https://www.who.int/reproductivehealth/publications/maternal_perinatal_health/cs-statement/en/**

**Impact of caesarean section on breastfeeding indicators: within-country and meta-analyses of nationally representative data from 33 countries in sub-Saharan Africa**
**https://bmjopen.bmj.com/content/9/9/e027497**

**NHRC meeting to discuss the status of the Right to Food, Nutrition and related policies concludes with several key observations and suggestions (10.08.21)**
**https://nhrc.nic.in/media/press-release/nhrc-meeting-discuss-status-right-food-nutrition-and-related-policies-concludes%20%20**